Dr. Ratan Kumar Jha
Head, Geog. Dept.
Marwari's College Darbhanga

classmate
Date ______
Page ______

D.D (Hon/Sub)

Sub:- Geography (Hon/Sub) IV Paper

Resource Geog. (संसाधन भूगोल)

Q. (i) संसाधन से क्या तात्पर्य है? इसके विभिन्न प्रकारों की व्याख्या कीजिये

(ii) संसाधन होते नहीं (बल्कि) बनते हैं, व्याख्या कीजिये

Ans:- वातावरण में उपलब्ध वे सारे प्राकृतिक व सांस्कृतिक अथवा जैविक या अजैविक तत्व जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मानव की इच्छाओं या आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं या पूर्ति में सहयोग प्रदान करते हैं, संसाधन कहलाते हैं। उदाहरणार्थ प्रकृति प्रदत्त मिट्टी, जल, वन खनिज, जीव जन्तु प्राकृतिक संसाधन हैं तो मानवीय क्रियाकलाप को गति प्रदान करने वाले तत्व यातायात एवं संचार के साधन सांस्कृतिक संसाधन कहलाते हैं। पुनः इन तत्वों के रूप परिवर्तन या संशोधन कर उपयोगिता में वृद्धि लाने वाले तथा उपभोक्ता मानव भी मानव संसाधन हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वे सारे तत्व जो मानव के अनिवार्य आवश्यकता की पूर्ति करते हैं अथवा आर्थिक विकास को गति प्रदान करते हैं संसाधन हैं।

संसाधन को अनेक भूगोलवेत्ताओं ने भी इसी प्रकार परिभाषित किया है;-

(i) Encyclopedia of Social Sciences; "Resources are those aspects of man's environment which facilitate the satisfaction of human wants - - -."

(ii) Fisher; "Resources are anything that can be used to satisfy a need or desire."

(ii) Smith & Philips; "Fundamentally, resources are merely environment functioning in the service of man"

उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि वातावरण में उपलब्ध कोई भी तत्व जो मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं संसाधन कहलाते हैं अर्थात यदि तत्व मानवीय पहुंच से दूर है और मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति में उपयोग नहीं हो पाता तो उसे संसाधन नहीं माना जा सकता। उदाहरण के रूप में अंटार्कटिका महाद्वीप में स्थित कोयला का भंडार संसाधन नहीं है। कारण कोयला आधुनिक औद्योगिक विकास का आधारभूत शक्ति का स्रोत है। फिर भी कठोर जलवायु एवं बर्फीला भू-भाग होने के कारण अन्टार्कटिका स्थित कोयला सिर्फ तत्व है संसाधन नहीं।

पृथ्वी के सतह पर एवं गर्भ में प्रकृति ने अनेक सारे पदार्थ उपलब्ध कराये हैं जो मानव एवं अन्य जीव जन्तु के जीवन का आधार तो है ही साथ वर्तमान आर्थिक विकास का आधारभूत तत्व है। परन्तु ये सारे तत्वों में अधिकांश अपने मूल रूप में उपयोगी नहीं होते। अतः उन तत्वों को मानव अपनी बौद्धिक क्षमता द्वारा रूप परिवर्तित कर या संशोधन कर मानवीय उपयोग के लायक बनाया जाता है तभी वह संसाधन कहलाता है। इसीलिये कहा जाता है कि "संसाधन होते नहीं बनाये जाते हैं।"

Scanned with CamScanner

प्रकृति के वातावरण में उपलब्ध संसाधन अनेक प्रकार के हैं जिन्हें मूल रूप से तीन भागों में बाँटा जा सकता है:—

(1) प्राकृतिक संसाधन:- वे सारे तत्व जो प्रकृति प्रदत्त हैं और मानवीय आवश्यकता की पूर्ति में योगदान देते हैं प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं। जैसे — भूमि, मिट्टी जल, वनस्पति, खनिज, जीव-जन्तु, इत्यादि।

(2) सांस्कृतिक संसाधन:- वे संसाधन जो मानव द्वारा निर्मित हैं एवं प्राकृतिक तत्व तत्वों को संसाधन के रूप में विकसित कर उपयोगी बनाने में सहयोग प्रदान करते हैं। जैसे यातायात के स्रोत, संचार के स्रोत इत्यादि।

(3) मानव संसाधन:- कोई भी प्राकृतिक तत्व मानवीय क्रिया द्वारा संसाधन के रूप में विकसित होता है। पुनः मानवीय आवश्यकताएँ इन तत्वों को संसाधन के रूप विकसित करने का मार्ग प्रशस्त करता है। अतः मानव संसाधन का निर्माता एवं उपभोक्ता दोनों है। अतः मानव को भी संसाधन माना गया है।

भू-पटल पर पाये जाने वाले संसाधनों को उनकी उपलब्धता, उपयोगिता के आधार पर भी विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है जो निम्न प्रकार हैं:—

(1) सर्व सुलभ संसाधन:- जो संसाधन भू-पटल पर सभी जगह आसानी से उपलब्ध है वो और सर्व सुलभ संसाधन कहा जाता है जैसे — वायु।

(2) सामान्य सुलभ संसाधन:- इनका वितरण भू-पटल पर कम या अधिक सभी जगह है। जैसे मिट्टी जल, वनस्पति इत्यादि सर्वत्र उपलब्ध होते हैं।

(3) विरल संसाधन:- इसके अन्तर्गत वे संसाधन आते हैं जो सर्वत्र एवं पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं होते जैसे विभिन्न प्रकार के खनिज।

(1)

classmate Date Page

(2) प्र. 2. संसाधन होते नहीं बनते हैं, व्याख्या करें

Ans:- भू पटल पर अवस्थित सभी जीवों में मानव सबसे अधिक विवेकशील एवं क्रियाशील प्राणी है। मानव अपनी भौतिक एवं बौद्धिक क्षमता के अनुरूप आर्थिक क्रिया करता रहता है। इस क्रिया में वह प्रकृति द्वारा प्रदत्त विभिन्न तत्वों का अपनी इच्छा एवं आवश्यकता अनुसार उपयोगी बनाता है तथा उपयोग करता है। इस प्रकार मानव ही वातावरण के तत्वों को रूप परिवर्तित कर अथवा संशोधन करके उसका मूल्य बढ़ाता है। इसीलिये कहा जाता है कि संसाधन होते नहीं बनाये जाते हैं।

वातावरण ने मनुष्य के चारो ओर अनेक तत्व उपलब्ध कराये हैं जिसके बीच मानव अपनी आर्थिक क्रिया कलाप करता है। इसे मानव और उसका वातावरण कहा जाता है। इन तत्वों में भूमि, मिट्टी, जल, वनस्पति, जीव जन्तु, खनिज के साथ-साथ जलवायु महत्वपूर्ण तत्व हैं। ये सारे तत्व प्राकृतिक हैं और इसका उपयोग मानव उसी रूप में नहीं कर सकता। अतः मानव इन तत्वों में से अपनी इच्छा एवं आवश्यकता अनुसार तत्वों का चयन करता है फिर अपनी भौतिक प्रयासों एवं बौद्धिक क्षमता द्वारा उस तत्व का रूप परिवर्तन कर अथवा संशोधन कर अपनी आवश्यकता के अनुरूप बनाता है, जैसे विभिन्न खनिजों से बनी उपयोगी सामग्रियां, पेड़ की लकड़ियों से बने आवश्यक सामग्रियां इत्यादि। इसी तरह मानव मिट्टी एवं जल का रूप नहीं बदल सकता है परन्तु उसके सहयोग से एवं अपनी क्रिया द्वारा कृषि कार्य करके भोजन सामग्री उत्पन्न करता है। मानव द्वारा किये गये इन क्रियाओं द्वारा

Scanned with CamScanner

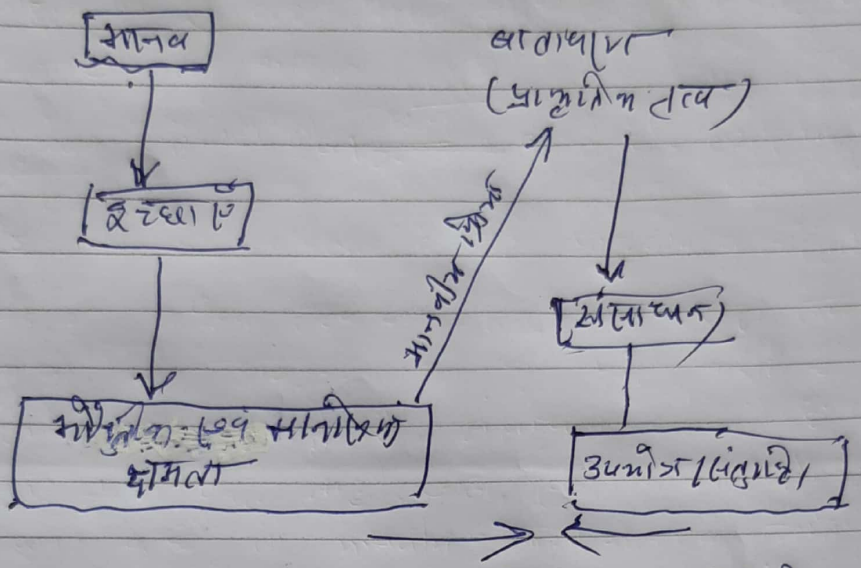

संस्कृति का निर्माण करता है। ये सांस्कृतिक तत्व प्राकृतिक तत्वों के सहयोग से ही होता। किये जाते हैं जैसे - यातायात के साधन, सिंचाई के साधन इत्यादि। इस प्रकार संसाधन प्राकृतिक तत्वों एवं मानवीय क्रियाओं का प्रतिफल है। इसे निम्न रेखाचित्र से समझा जा सकता है:—

मानव प्राकृतिक तत्वों के सहयोग से संसाधन निर्माण कर अपनी प्रगति की है। यह प्रगति मानव के बुद्धि, कौशल, क्षमता, अनुभव एवं भौतिक प्रणालों पर निर्भर करता है। मानव समाज का वर्तमान विकसित स्वरूप या प्रगति इसी मानवीय क्रियाओं का प्रतिफल है। इसमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण तत्व मानव द्वारा विकसित तकनीकी क्षमता है जो आर्थिक क्रियाओं को गति प्रदान करता है। अर्थात प्रौद्योगिकी ही प्राकृतिक तत्वों को उपयोगिता या मूल्य प्रदान करता है।

अतः यह कथन सत्य है कि "संसाधन होते नहीं बनाये जाते हैं।"

—x—

डा० रतन कुमार झा
विभागाध्यक्ष
भूगोल विभाग

Scanned with CamScanner